स्वयं में व्यवस्था

स्वयं में अध्ययन

1. अध्ययन वस्तु:

   a. चाहना - लक्ष्य — सुख, समृद्धि → निरंतरता

   b. करना - कार्यक्रम — सुख = संगीत में, व्यवस्था में जीना

↓

व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना

1. **मानव में व्यवस्था**
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था

2. अध्ययन विधि

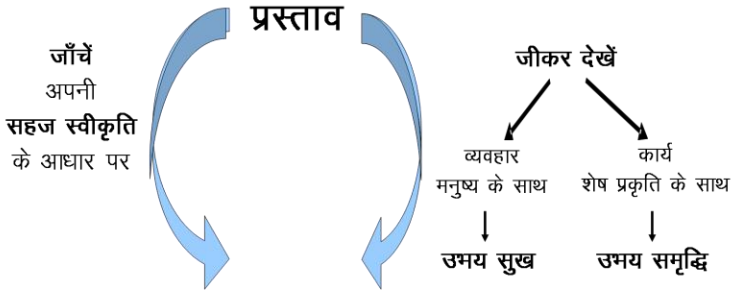

Human Being मानव	Self (I) मैं	Co-existence सहअस्तित्व	Body शरीर
Need आवश्यकता	**Happiness (e.g. Respect)** सुख (जैस सम्मान)		**Physical Facility (e.g. Food)** सुविधा (जैसे भोजन)
In Time काल में	**Continuous** निरन्तर		**Temporary** सामयिक
In Quantity मात्रा में	**Qualitative (is Feeling)** गुणात्मक (भाव है)		**Quantitative (Required in Limited Quantity)** मात्रात्मक (सीमित मात्रा में)
Fulfilled By पूर्ति के लिए	**Right Understanding & Right Feeling** सही समझ, सही भाव		**Physio-chemical Things** भौतिक–रासायनिक वस्तु
Activity क्रिया	**Desire, Thought, Expectation…** इच्छा, विचार, आशा…		**Eating, Walking…** खाना, चलना…
In Time काल में	**Continuous** निरन्तर		**Temporary** सामयिक
Response	**Knowing, Assuming, Recognising, Fulfilling** जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना		**Recognising, Fulfilling** पहचानना, निर्वाह करना
	Consciousness चैतन्य		**Material** जड़

Activities of Self (I) मैं की क्रियायें

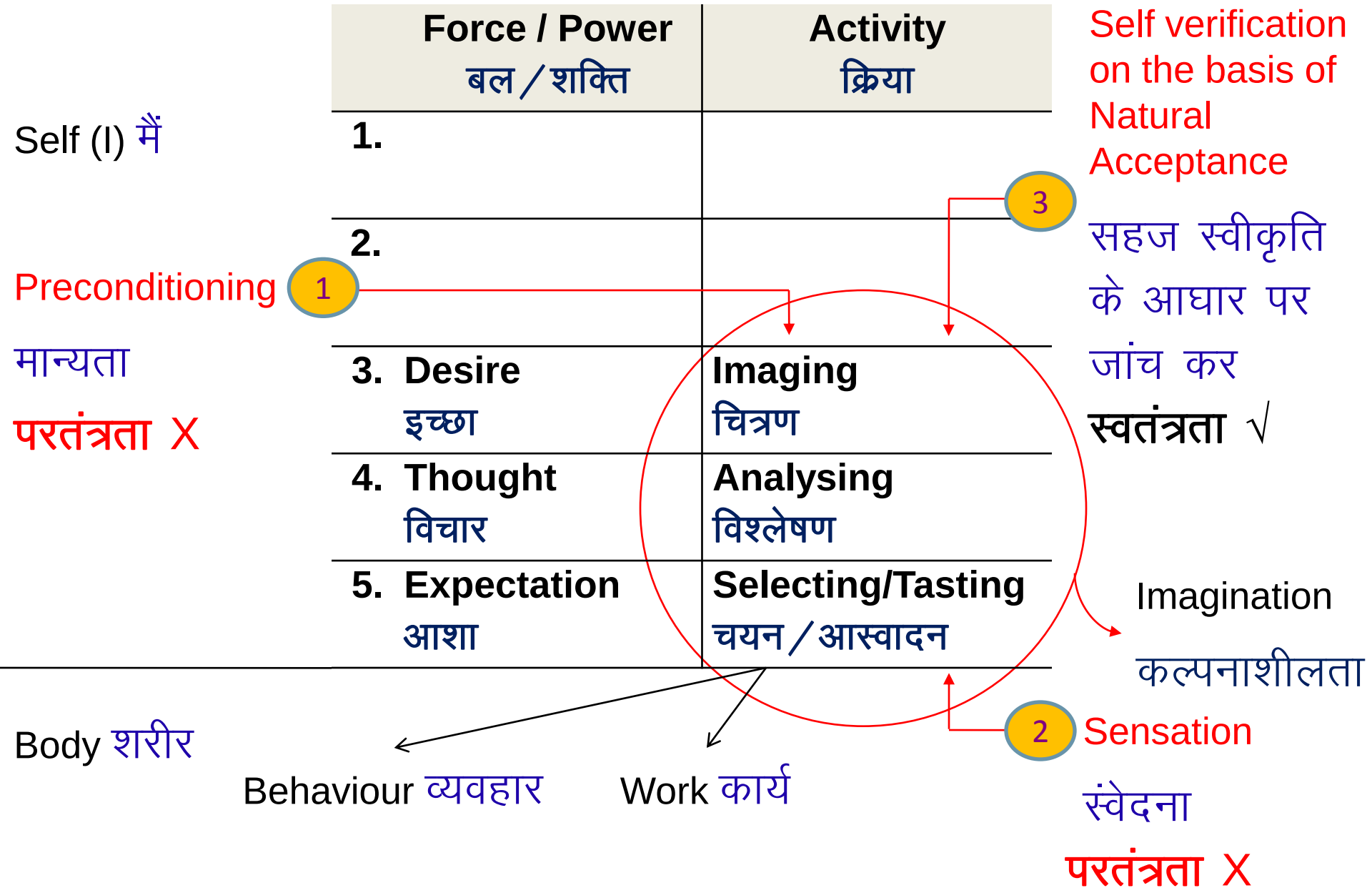

प्रयोग – इच्छाओं की सूची

अपनी इच्छाओं की सूची बनाएं

उन्हें विभक्त करें :–

- मैं और शरीर की आवश्यकता के आधार पर
- कहाँ से आ रही हैं– मान्यता, संवेदना, सहज स्वीकृति के आधार पर

सारांश

इच्छा, विचाार, आशा (कल्पनाशीलता) की क्रियाएँ निरंतर हैं।

व्यवहार, कार्य कल्पनाशीलता के आधार पर होता है।

कल्पनाशीलता का आधार मान्यता, संवेदना या सहज स्वीकृति है।

सहज स्वीकृति के आधार पर कल्पनाशीलता निश्चित होती है। अतः व्यवहार, कार्य भी निश्चित होता है। यही स्वतंत्रता है।

मान्यता या संवेदना के आधार पर कल्पनाशीलता निश्चित नहीं होती है। अतः व्यवहार, कार्य भी निश्चित नहीं होता है। यही परतंत्रता है।